माधवी

विषय : हिन्दी

अध्याय : माधवी

अध्याय लेखिका : डॉ. रमा यादव

कॉलेज / विभाग : मिरांडा हाउस (हिंदी विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय

माधवी

विषय-प्रवेश

1.1.1 कथानक

1.1.2 कथानक की प्रासंगिकता तथा कथानक के माध्यम से उठाए गये प्रश्न

1.1.2.1 चरित्र-चित्रण

1.1.3. माधवी : स्त्री जीवन की त्रासदी

1.1.4 गालव :आत्मकेन्द्रित चरित्र

1.1.5. ययाति : पिता से अधिक चक्रवर्ती सम्राट

1.1.6 विश्वमित्र एवं अन्य चरित्र

1.1.6.1 नामकरण

1.1.6.2 परिवेश

1.1.6.3 संवाद तथा भाषा-शैली

1.1.6.4 रंगमंचीयता

1.1.6.5 उद्देश्य

निष्कर्ष

प्रश्नोत्तर

संदर्भ ग्रंथ, अन्य स्रोत:

माधवी

विषय-प्रवेश

माधवी भीष्म साहनी का नाटक है। भीष्म साहनी हिन्दी साहित्य के एक जाने-माने हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म 8 अगस्त 1915, को रावलपिंडी में हुआ। भीष्म साहनी के साहित्य में कथ्यगत विविधता के दर्शन होते हैं। उनके उपन्यास 'तमस' में जहाँ साम्प्रदायिकता के दंश को अभिव्यक्ति मिली है , वहीं उनकी कहानियाँ विविध विषयों से 'डील' करती है। भीष्म साहनी ने तीन नाटकों- हानूश, माधवी तथा कबिरा खड़ा बाजार में की रचना की। यह तीनों ही नाटक अपनी बुनावट तथा कलेवर में अत्यंत भिन्नता रखते हैं तथा तीनों ही रंगमंचीय दृष्टि से अत्यंत सफल नाटक रहे हैं। 'हानूश' में राजसत्ता और आम आदमी के द्वंद्व का चित्रण है तो 'कबिरा खड़ा बाजार में' के माध्यम से नाटककार ने मध्यकालीन प्रसिद्ध संत कवि कबीर को उनके युग के साथ जीवंत कर दिया है, 'माधवी' पौराणिक कथा पर आधारित नाटक है जो स्त्री जीवन से जुड़े प्रासंगिक प्रश्नों को उठाता है। भीष्म साहनी के नाटक कथ्य की दृष्टि से ही नही वरन मंच की दृष्टि से भी अत्यंत सफल रहे हैं, जिसका एक प्रमुख कारण यह भी रहा कि वह स्वयं भी एक सफल रंगकर्मी रहे।

1.1.1 कथानक

'माधवी' महाभारत की कथा पर आधारित नाटक है। नाटक की कथावस्तु यद्यपि 5,000 वर्ष पुरानी है फिर भी माधवी की प्रासंगिकता असंदिग्ध है। इस नाटक की प्रमुख चरित्र माधवी महाभारत के प्रसिद्ध चक्रवर्ती सम्राट ययाति की पुत्री है। ऋषि विश्वामित्र का शिष्य गालव अपनी शिक्षा समाप्ति के समय गुरु दक्षिणा देने की हठ करता है | विश्वामित्र उसके हठी स्वभाव से क्रुद्ध होकर आठ सौ अश्वमेधी घोड़े माँग लेते हैं। गालव दर-दर भटकता हुआ अंततः राजा ययाति के पास पहुँचता है जो अब राज-पाट से निवृत्त होकर आश्रम में निवास कर रहे हैं। गालव राजा ययाति से उनकी दानवीरता के विषय में कहता है तथा उनसे आठ सौ अश्वमेधी घोड़े देने का निवेदन करता है। राजा ययाति इसमें अपनी असमर्थता जताते हैं तो गालव उन्हें उनकी दानवीरता का हवाला देता है। अंततः राजा ययाति अपनी एकमात्र कन्या माधवी को गालव को दान में दे देते हैं। यहीं से **माधवी के जीवन की त्रासदी** का आरंभ होता है।

गालव ययाति द्वारा माधवी के जीवन का यह रहस्य जानकर कि वह चक्रवर्ती पुत्र को जन्म देगी- "राजज्योतिषियों ने माधवी के लक्षणों की जाँच की है। इसके गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक चक्रवर्ती राजा बनेगा।" (पेज-18 माधवी) इसे और भी अनेक वर प्राप्त हैं। इसे चिर कौमार्य का वर प्राप्त हैं तुम्हें स्वयं पता चल जाएगा। " (पेज-19 माधवी) आम व्यक्ति की तरह लालसा से घिर जाता है- 'माधवी जिसे जन्म देगी वह चक्रवर्ती राजा बनेगा ; ऐसा

ही कहा महाराज ने! क्या माधवी के गर्भ से पैदा होने वाला गालव का पुत्र भी चक्रवर्ती राजा हो सकता है? चक्रवर्ती गालव! मेरे सामने संभावनाओं के कैसे प्रसार खुलने लगे हैं। माधवी को पाने का अर्थ है, चक्रवर्ती राजा बन जाने की संभावना।" (पेज 22 माधवी) और इस सबसे अंजान माधवी गालव को हृदय से प्रेम करने लगती है।

कथा में उपस्थित **द्वन्द** और **तनाव** की स्थिति तब और गहरी हो जाती है जब माधवी अयोध्या के राजा हर्यश्च के यहाँ दो सौ अश्वमेधी घोड़े प्राप्त करने के लिए तब तक रहने को कहती है जब तक वह राजा के लिए एक पुत्र को जन्म न दे दे। माधवी का यह निर्णय **व्यक्तिगत सामाजिक स्तर पर अत्यंत 'बोल्ड' तथा हतप्रभ कर देने वाला है।** परन्तु साथ ही साथ एक प्रकार की उत्तेजक स्थिति भी पैदा करता है कि किसी और की प्रतिज्ञा के लिए अपने आपको दांव पर लगाना कहाँ तक तर्कसंगत है। माधवी अपने आत्मसम्मान को भूलकर केवल गालव के उद्देश्य पूर्ति के लिए साधन बनना स्वीकार करती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह अपने भीतर के ममत्व को भी मार डालती है और अत्यंत दारुण वेदना भोगती है। माधवी के जीवन की वास्तविक त्रासदी तब आरंभ होती है जब वह अपने नवजात शिशु को छोड़कर गालव के पास आ जाती है। गालव को गुरु के ऋण से उऋण कराने के लिए माधवी एक के बाद दूसरे राजा के रनिवास में तब तक रहना स्वीकार करती है जब तक वह उसके लिए चक्रवर्ती पुत्र पैदा न कर दे। माधवी की यह प्रतिज्ञा उसके प्रति एक प्रकार की खीझ पैदा करती है। राजाओं के दरबार से 600 अश्वमेधी घोडें जुटा लेने के उपरांत भी दो सौ अश्वमेधी घोड़ों का प्रश्न शेष बचा रहता हैं। इसका कारण यह होता हे कि शेष किसी भी राजा के पास अश्वमेध के और घोड़े नहीं होते। फलतः माधवी गालव को सोते छोड़ बिना बताए ऋषि विश्वामित्र के पास पहुँच जाती है और अपने आपको ऋषि को समर्पित कर गालव की प्रतिज्ञा पूरी करने का निमित बनती है। बावजूद इसके कि माधवी अपने आदर्शों में अत्यंत उदात्तता का परिचय देती है। आदि से लेकर अंत तक माधवी की कथा बेचैनी,खीझ और वेदना से भर देती है।

माधवी की कथावस्तु पौराणिक है। नाटककार ने कथावस्तु में परम्परागत नाट्य-तत्वों का उपयोग भी किया है, उदाहरण के लिए कथावाचक। कथावाचक अंको को आपस में जोड़ने का काम करता है जिससे कथा अतिव्याप्ति के दोष से बचती है। कथावाचक के अभाव में नाटक में अनेक ऐसे प्रसंगो की सृष्टि करनी पड़ती , जिन्हें मंच पर दिखाना सम्भव नहीं , जैसे भगवान विष्णु द्वारा अपने वाहन गरुड़ को विश्वामित्र के शिष्य गालव के पास भेजना, गालव का वनों घाटियों को लांघने का वर्णन , वितस्तता में बाढ़ आने का वर्णन, गालव द्वारा सम्पूर्ण उत्तराखंड छान डालने का वर्णन आदि। कथावाचक प्रत्येक अंक के आरम्भ में दर्शकों को नाटक के कार्य व्यापारों की सूचना देता है इस सूचना के अभाव में नाटक के बहुत लम्बे होने का भय बना रहता। माधवी , गालव, विश्वामित्र तथा ययाति कि अलग-अलग स्थान सम्बन्धी घटनाओं को बांधने के लिए कथावाचक का होना अत्यंत आवश्यक था।

इसके साथ ही साथ नाटककार ने नाटकों में परम्परागत तत्वो–आकाशवाणी, स्वप्नदर्शन आदि का भी प्रयोग किया है।

1.1.2 कथानक की प्रासंगिकता तथा कथानक के माध्यम से उठाए गये प्रश्न

माधवी नाटक मूलतः परंपरागत , पौराणिक या आधुनिक तत्वों की व्याख्या के लिए नहीं लिखा गया बल्कि इसमें **'नारी अस्मिता' जैसी शाश्वत समस्या** को उठाया गया है। शाश्वत इसलिए कि लंबे संघर्षों के बाद आज भी नारी समाज में अपनी सार्थक पहचान नहीं बना पाई है। आज भी उसे पिता , भाई, पति अथवा पुत्र का सहारा लेने के लिए मजबूर कर दिया जाता है। यह नाटक मूलतः **स्त्री विमर्श** जैसे अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण तथा ज्वलंत विषय से जूझता नजर आता है। यही कारण है कि नाटक की कथावस्तु पौराणिक होने पर भी इसकी प्रासंगिकता पर किसी प्रकार संदेह नहीं किया जा सकता। यह नाटक पुरुषवादी अहम के प्रति दर्शकों तथा पाठकों को नए सिरे से सोचने के लिए विवश करता है। इस नाटक में पुरुष वर्ग के उस दृष्टिकोण को व्यंजित किया गया है जिसके चलते वह नारी को एक जड़ वस्तु के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता। 5,000 वर्ष पूर्व की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखा गया यह नाटक आज की नारी को भी बहुत कुछ सोचने पर विवश कर देता है। यह सही है कि आज स्त्री उन्नति के अनेक सोपानों को पार कर चुकी है परन्तु फिर भी कहीं न कहीं वह अनेक स्तरों पर अनेक प्रकार के बंधनों में बंधी है जो उसे उसकी स्वच्छंद उड़ान भरने से रोकते हैं।

नाटक की कथा कथावाचक के संवाद से आरंभ होती है। गालव जो कि विश्वामित्र का शिष्य है, अपने गुरु विश्वामित्र की गुरु दक्षिणा के लिए आठ सौ अश्वमेधी घोड़ों की तलाश में है। अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु वह ययाति के द्वार पर आता है। ययाति अपनी एकमात्र कन्या माधवी को दान स्वरूप गालव को दे देता है। माधवी अपने पिता और गालव दोनों की ही उद्देश्य सिद्धि का प्रमुख साधन बनती है परन्तु पुरुषवादी अहम् अथवा पुरुष होने का गौरव तब भी नारी को कमजोर और अस्थिरमना मानता है। इस नाटक में माधवी की त्रासद कथा के माध्यम से नारी को एक बार पुनः अपनी सामाजिक और पारिवारिक स्थिति पर विचार करने को नाटककार ने प्रेरित किया है। कोई भी पुरुष चाहे वह पिता हो , पति हो, भाई हो अथवा पुत्र किसी स्त्री को दान में देने का साहस कैसे कर सकता है ? 'माधवी' नाटक आरंभ से ही एक तनाव की सृष्टि करता है और कथावस्तु के आगे बढ़ने के साथ-साथ यह तनाव और अधिक तीव्र होता जाता है। नाटक को पढ़ते अथवा देखते समय दर्शक के मन में **एक खास किस्म का आक्रोश जड़ सामाजिक व्यवस्था** के प्रति पैदा हो जाता है। यह नाटक उस सामाजिक जड़ मान्यताओं को अभिव्यक्ति देता है , जो नारी को एक वस्तु से अधिक 'ट्रीट' नहीं करती। माधवी अपने भीतर की कोमल भावनाओं के कारण आदि से लेकर अंतर तक त्याग और बलिदान की मूर्ति बनी रहती है। उसके भीतर अपनी दारुण अवस्था और त्रासद जीवन को

माधवी

बदलने के लिए कोई आक्रोश नहीं जन्मता। माधवी का कथन है- "मैं क्या चाहूँगी ? मेरे चाहने से क्या होता है , गालव? मैं तो तुम्हारी गुरु-दक्षिणा का निमित्त मात्र हूँ। " (पेज 23 माधवी) माधवी का मौन होकर अपने जीवन को किसी पर पुरुष के लिए होम कर देना भी भीतर तक कुरेदता है।

इस नाटक की कथावस्तु **अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण मुद्दों** को भी उठाती है। **राजाओं द्वारा चक्रवर्ती पुत्र की प्राप्ति की लालसा** भी एक प्रमुख मुद्दा है- "यह भी कैसी विडम्बना है , गालव, कि जो व्यक्ति पहले ही राजा है , लोगों पर राज करता है, वह चक्रवर्ती राजा बनना चाहता है , अश्वमेध के घोड़े दौड़ाता है , राजा से चक्रवर्ती राजा" (पेज 25 माधवी) काशी का राजा सत्रह पुत्री रत्न होने के बावजूद भी पुत्र की प्राप्ति की इच्छा रखता है। इसी प्रकार नाटक , राजा के रनिवास की रानियों की स्थिति पर भी प्रकाश डालता है। राजा का जब तक मन होता है वह रानी को राज प्रसाद में रखता है और जब उसका उनसे मन भर जाता है तो उन्हें रनिवास में डाल दिया जाता है और जिन रानियों से राजा को संतान की प्राप्ति नहीं होती थी उनकी स्थिति तो और भी बदत्तर थी- माधवी का गालव से कथन है- "जानते हो, जिन रानियों से राजा को संतान नहीं मिली , महल की दीवारों के पीछे उनकी क्या गति हुई है ? उन्हें भोजन तक के लिए कोई नहीं पूछता था। मेरे महल में आ जाने के बाद भी राजा ने दो ब्याह और किए हैं। " (पेज-55 माधवी) यह नाटक राजाओं की विलासी तथा भोगवादी प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। राजाओं की दृष्टि में स्त्री और सोने में कोई भेद नहीं था। हर्यश्च का कथन है- "सोना भी जब लिया जाता है तो तोल-मोल करके लिया जाता है। " (पेज 30 माधवी) **राजाओं की** दृष्टि में स्त्री का मूल्य **उपयोगितावादी दृष्टि** से बढ़कर नहीं था। यदि वस्तु काम में आती है तब तक ठीक है अन्यथा उसे रखने से क्या लाभ ? यही कारण है कि माधवी को राज प्रसाद में रखने से पूर्व राजा हर्यश्च भली-भाँति उसका तोल-मोल कर लेना चाहते हैं। राज ज्योतिषी से राजा हर्यश्च का कथन है- "हम इस युवती के लक्षण जानना चाहते हैं। अच्छी तरह से जाँच कर हमें बताइए... कुछ भी छिपाइयेगा नहीं , और बढ़ा-चढ़ाकर भी नहीं बताइयेगा।" (पेज 30 माधवी) नाटक का कथानक **मातृ हृदय की पीड़ा** को भी अभिव्यक्ति देता है। दान में दी गई स्त्री जब माँ बनती है तो अपने माँ होने का कर्त्तव्य भी वह नहीं निभा पाती , उसे अपने मन को मारकर रहना पड़ता है। माधवी अपनी वास्तविक स्थिति का विश्लेषण तो कर पाती है , परन्तु अपने को मुक्त करने की रीति वह नहीं जानती।

नाटक की कथा प्रकारान्तर से **नारी वर्ग पर पुरुष वर्ग के वर्चस्व और अप्रत्यक्ष अत्याचारों** का उद्घाटन करती है। नारी और पुरुष का भेदभाव सदियों से चला आ रहा है। समय की लंबी खाई भी इस अंतर को नहीं पाट पायी है। नारी को सदा पुरुष से दुर्बल माना गया है। ऐसा नहीं है कि नारी दृढ़निश्चयी नहीं है या फिर अपने कर्त्तव्य -पथ पर अटल नहीं रह सकती| परन्तु उसके स्वभाव की कोमलता और उसका मातृत्व उसकी कठोरता के आड़े आता है।

माधवी

माधवी का कथन है- "नहीं गालव ऐसा होगा भी नहीं तुम्हारा संकल्प भी पूरा हो गया और मेरे पिता का वचन भी दुर्बल माधवी दोनों का दायित्व निभायेगी| मुझे तो केवल वसुमना याद हो आया था।...इस दुर्बल नारी का यों भी कोई अस्तित्व नहीं है, न उस लम्पट राजा के लिए, न अयोध्या नगरी के लिए, न मेरे पिता के लिए और शायद तुम्हारे लिए भी नहीं गालव। आज सचमुच मुझे स्वतंत्रता मिली है। मैं मुक्त हुई हूँ माधवी न घर की न घाट की।" संपूर्ण नाटक का **कथानक मार्मिकता के भीतर एक प्रकार के आक्रोश की सृष्टि करता है।** माधवी का वस्तु की तरह एक राजा से दूसरे राजा के दरबार में जाना तथा अपने प्रति तटस्थ बने रहना दर्शक को क्षुब्ध करता है।

1.1.2.1 चरित्र-चित्रण

किसी भी नाटक के कथ्य को अभिव्यक्ति देने वाला दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष चरित्र-चित्रण होता है। माधवी एक ऐसा नाटक है जिसमें चरित्रों की भरमार है परन्तु इस नाटक का कोई भी चरित्र ऐसा नहीं है , जो ऊपर से थोपा हुआ लगे। यद्यपि माधवी स्त्री प्रधान नाटक है , परन्तु इसमें स्त्री-चरित्र केवल एक ही है- माधवी। माधवी के अतिरिक्त अन्य सभी पात्र पुरुष हैं। इस प्रकार की चरित्र योजना के पीछे नाटककार का उद्देश्य कथ्य को अधिक तनाव और द्वन्द के साथ प्रस्तुत करना है। पुरुष प्रधान समाज में नारी किस प्रकार अकेली पड़ जाती है यह रूपायित करना भी नाटककार का एक प्रमुख उद्देश्य है। माधवी नाटक की केन्द्रीय भूमिका में है इसके अतिरिक्त ययाति , विश्वामित्र तथा गालव के चरित्र भी महत्त्वपूर्ण वास्तव में यह नाटक नायक की परंपरागत अवधारणा को नकारता है। ययाति तथा विश्वामित्र जैसे बड़े तथा प्रसिद्ध चरित्रों की उद्भावना के बाद भी इस नाटक की नायिका माधवी ही ठहरती है। माधवी मूलतः एक नारी प्रधान नाटक है।

1.1.3. माधवी : स्त्री जीवन की त्रासदी

माधवी महाभारत के प्रसिद्ध राजा ययाति की एकमात्र पुत्री है। नाटक की संपूर्ण कथा माधवी के इर्द-गिर्द घूमती है अतः यह नाटक का **सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण** चरित्र है। माधवी दिव्य, विभूतियों से विभूषित नारी है। उसे चिर कौमार्य और चक्रवर्ती पुत्र प्राप्ति का वरदान प्राप्त है, परन्तु माधवी का यह **वरदान ही उसके जीवन का अभिशाप** बन जाता है, क्योंकि उसके इस वरदान के कारण ही ययाति उसे विश्वामित्र के शिष्य गालव के उद्देश्य की सिद्धि का साधन समझ दान में दे देते हैं।

माधवी नाटक में प्रथम प्रवेश के समय एक **अल्लहड़ युवती** दिखती है। ययाति के बुलाने पर वह चहकती हुई आती है और प्रश्न करती है- "क्या है, पिता जी? (पेज 18 माधवी) परन्तु अचानक ही जैसे उस पर वज्रपात हो जाता है , जब ययाति कहता है कि- "तुम मुनि कुमार के साथ जाओ।" (पेज 18 माधवी) यह आदेश उसे सर्वथा असंभाव्य लगता है।

इसीलिए वह कहती है- "मैं समझी नहीं पिताजी।" दूसरा वज्रघात उस पर तब होता है जब उसके पिता उससे कहते हैं- "यह युवक तुम्हें सब समझा देगा।

माधवी **कर्त्तव्यनिष्ठ** पुत्री है। वह पिता के वचनों का पालन करने वाली संतान है। यही कारण है कि वह अपने पिता से अपने को दान में दिए जाने पर किसी प्रकार का कोई सवाल नहीं करती। वह केवल इतना ही कह पाती है- "दान में?" (पेज 18 माधवी) माधवी **मातृहीना** है। अपने पिता द्वारा मुनिकुमार गालव को दिए जाने पर उसके हृदय को अपार कष्ट होता है। उसे अपनी माँ की स्मृति हो आती है- "आज माँ होतीं तो क्या वह मुझे इस तरह दान में दे देतीं।" (पेज-19 माधवी) माधवी का यह प्रश्न उसके भीतर की असहाय स्थिति को दर्शाता है। परन्तु ययाति यह वाक्यांश कहकर उसे कुछ भी कहने से एक प्रकार से रोक देता है- "यह अपने गुरु के प्रति उतना ही निष्ठावान है , जितनी तुम अपने पिता के प्रति निष्ठावान हो। " (पेज-19 माधवी) माध वी शीघ्र ही एक अल्लहड़ युवती से कर्त्तव्यपरायणा युवती में बदल जाती है। उस पर एक साथ दो-दो भार आ जाते हैं और तो और उसे अपने पिता के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठता का परिचय देना है दूसरी ओर उसे गालव की उद्देश्य पूर्ति में भी सहायक बनना है क्योंकि वह अब दान में दी गई वस्तु से अधिक कुछ भी नहीं है।

राजा ययाति ने माधवी को मुनिकुमार गालव को दान में दिया था। गालव माधवी के जीवन में आने वाला पहला पुरुष था अतः यह सहज ही था कि **माधवी का आकर्षण गालव के प्रति** हो जाता है। वह गालव को मन ही मन प्रेम करने लगती है। परन्तु वह स्वयं अपने को साधन मात्र ही समझती है। इसीलिए तो वह कहती है- "मैं क्या चाहूँगी? मेरे चाहने से क्या होता है, गालव? मैं तो तुम्हारी गुरु दक्षिणा का निमित्त मात्र हूँ।"

माधवी को अपनी **साधनगत स्थिति के प्रति रोष** तो है परन्तु न तो प्रतिकार करने की शक्ति है और न प्रतिकार का भाव है। वह अपने आपको स्थिति के प्रति समर्पित कर देती है। परिस्थितियों से लड़ने का भाव उसमें नहीं- "पिताजी ने आदेश दिया तो तुम्हारे साथ चली आयी , तुम आदेश दोगे तो किसी राजा के रनिवास में चली जाऊँगी। " (पेज 23 माधवी) माधवी जानती है कि वह **दान में दी हुई वस्तु** है और दान में दी हुई वस्तु का अपना कुछ भी नहीं होता- "मैं तो तुला पर चढ़ाई जाऊँगी, कोई राजा घोड़े देकर, बदले में मुझे ग्रहण करेगा।" (पेज 24 माधवी)

माधवी **गालव को प्राण-प्रण से प्रेम करती है** तथा उसके प्रति पूर्णतः समर्पित है। यही कारण है कि वह उसके साथ एक राजा से दूसरे राजा के दरबार में जाती है। राजा हर्यश्च के दरबार में उसके मुँह से एक हल्की सी प्रतिक्रिया निकलती है- "यह क्या हो रहा है , गालव? तुम मुझे कहाँ ले आये हो ? मेरे साथ किस जन्म का वैर चुकाने आये हो ? मैंने कौन-सा ऐसा पाप किया था जिसका यह फल मुझे मिल रहा है।" (पेज 32 माधवी) पर उसकी बात पर किसी का

ध्यान नहीं जाता। वह तो मात्र मोल-भाव वाली वस्तु बनी रहती है। माधवी के जीवन की विडम्बना का आरम्भ तब होता है, जब वह 200 घोड़ों के बदले राजा हर्यश्च के दरबार में तब तक रहना स्वीकार करती है जब तक पुत्र लाभ नहीं होता- "मान जाओ, गालव। महाराज ने मान लिया है कि पुत्र जन्म के बाद वह मुझे मुक्त कर देंगे। तुम इनका प्रस्ताव मान लो, महाराज का सुझाव हमें स्वीकार हैं।" (पेज 35 माधवी)

माधवी यहीं से अपने **जीवन की त्रासदी** को निमंत्रित कर लेती है। वह गालव को यह तो कह देती है कि- "मैं पुत्र जन्म के बाद अनुष्ठान करने पर, फिर वैसी की वैसी हो सकती हूँ। फिर से पहले जैसा यौवन ग्रहण कर लूँगी। मेरे शरीर में कोई अंतर नहीं आयेगा। चिन्ता नहीं करो , यह समय शीघ्र ही बीत जाएगा। मुझे लगता है , सचमुच, एक दिन हम स्वतंत्र होंगे।" (पेज 36 माधवी) परन्तु माधवी और अधिक परतंत्र हो जाती है। जब उसके यहाँ संतान होती है तो पहले वाली माधवी जाने कहाँ चली जाती है और एक नई माधवी का जन्म होता है। नयी माधवी के भीतर गालव से अधिक अपने **पुत्र के प्रति ममता** है उसे अपनी स्थिति के प्रति खीझ भी है। परन्तु दान में दी गई वस्तु होने के कारण उसमें अपनी स्थिति से लड़ने का कोई साहस नहीं आ पाता। जो माधवी गालव से बिछड़ते हुए कहती है- "तुम अपना ध्यान रखना गालव , मेरी चिन्ता नहीं करना " मुझे याद रखना गालव.... भूल नहीं जाना। "(पेज 37 माधवी)वही जब पुत्र प्राप्ति के पश्चात गालव से मिलती है तो जैसे उसे हृदय में कहीं एक रिक्त भाव आ चुका होता है। इस बिन्दु से माधवी के **चरित्र में द्वन्द की सृष्टि** होती है। अभी तक वह स्थिति को ज्यों का त्यों स्वीकार लेती थी परन्तु अब उसने सोचना आरंभ कर दिया है- "ठीक कहते हो, गालव, वह मेरा लगता ही क्या है.... तुम्हें घोड़े मिल गए।" (पेज 49 माधवी)

अश्वमेधी घोड़ों और अपने पुत्र में से उसे अश्वमेधी घोड़ों का चुनाव करना पड़ता है यह उसके **जीवन की** सबसे बड़ी **विडंबना** है। माधवी का कथन है- "स्वतंत्र? कैसी स्वतंत्रता, गालव? उन दीवारों के पीछे मेरा नन्हा बालक मुँह खोले मेरा स्तन ढूँढ रहा है, और तुम कहते हो , मैं स्वतंत्र हूँ? गालव, क्या सचमुच तुम मुझे स्वतंत्र समझते हो? जो माँ अपने बच्चे को छाती से लगा पाये, वही स्वतंत्र होती है।" (पेज 54 माधवी)

माधवी पुरुषवादी मानसिकता पर व्यंग्य करती है। वह स्त्री की ताकत को, पहचानती है परन्तु अपना स्थान लेने का उसमें साहस नहीं- "एक कर्त्तव्य मेरे पिता का, एक कर्त्तव्य मुनिकुमार गालव का , दोनों के कर्त्तव्य मेरे माध्यम से पूरे हो रहे हैं। फिर भी मैं दुर्बल हूँ , कर्त्तव्यपरायण वही हैं। पिता ने सौंपकर मुझे अपना कर्त्तव्य निभा दिया और मुनिकुमार ने घोड़े बटोरकर अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। एक दानवीर बन गया। दूसरा आदर्श शिष्य और माधवी? मोह की मारी माधवी कर्त्तव्य से गिर गयी। वह किसी बड़े काम का दायित्व वहन नहीं कर सकती यही ना?" (पेज 55 माधवी) माधवी का यह कथन पुरुषवादी वर्चस्व को चुनौती है। उसका आगे का कथन- "यदि यह दुर्बल

माधवी

नारी बीच में से निकल जाये , गालव, तो क्या होगा ?" (पेज 55 माधवी) नाटक की मूल संवेदना को खोलकर रख देता है। वास्तव में माधवी का चरित्र लेखक ने एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को ध्यान में रखकर चित्रित किया है। **माधवी के माध्यम से लेखक नारी जाति की श्रेष्ठता** और उसके भीतर की शक्ति को प्रतिपादित करना चाहता है। पुरुष सदा से नारी को दुर्बल और कोमलांगी समझता रहा है परन्तु यह कोमलांगी नारी ही प्रसव की गहन पीड़ा सहकर पुरुष को जन्म देती है।अपने उद्देश्य की गंभीरता के कारण यह नाटक 'नारी विमर्श' से जुड़े नाटकों में प्रथम श्रेणी में रखा जाता है।

यह सही है कि माधवी अपने भीतर की शक्ति को पहचानती है पर **भावुकता** उस पर अधिक हावी रहती है तभी तो वह गालव से कहती है-"क्षमा करना गालव' मैं सचमुच बड़ी दुर्बल हूँ। मैं स्वयं अपनी दुर्बलता पर लज्जित हूँ। चलो गालव जहाँ ले चलोगे, चलूँगी। तुम्हीं मेरे भाग्य हो, गालव, तुम्ही मेरी नियति हो।" (पेज 56-57 माधवी) यह कोरी भावुकता माधवी के चरित्र को अंत तक घेरे रहती है। वह एक **आदर्शवादी** चरित्र के जामें से बाहर नहीं निकल पाती।

एक राजा से दूसरे राजा और दूसरे राजा से तीसरे राजा के रनिवास में रहने तथा अपने प्रत्येक पुत्र से बि छोह से माधवी बुरी तरह टूट जाती है। उसे स्वयं अपनी स्थिति पर तरस आने लगता है। वह अपनी स्थिति से जूझते-जूझते थक जाती है और इसका अंत करने के लिए स्वंय विश्वामित्र के सम्मुख उपस्थित हो जाती है। माधवी का विश्वामित्र को कहा गया कथन उसकी टूटन को पूरी तरह से अभिव्यक्ति देता है- "महाराज, मैं उसी भाँति आपकी आज्ञा का पालन करूँगी, जिस भाँति तीन राजाओं के रनिवास में करती रही हूँ। मैं विशिष्ट लक्षणों वाली हूँ, महाराज, आपको भी मुझसे पुत्र लाभ होगा। मुझे ग्रहण कर आपको पश्चाताप नहीं होगा , महाराज। सभी राजा मेरे साथ प्रसन्न थे। सभी मुझे अपने रनिवास में रखना चाहते थे। पुत्र लाभ होने पर आप गालव को गुरु दक्षिणा के दायित्व से मुक्त कर दें।" (पेज 80 माधवी) ऊपर से देखने पर यह माधवी, का प्रलाप लगता है परन्तु वास्तव में देखें तो यह माधवी के जीवन की वेदना है जो उसके शब्दों में अभिव्यक्ति पाती है।

माधवी नाटक के अंत तक **त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति** बनी रहती है पर ऐसा नहीं है कि वह वास्तविकता को नहीं समझती गालव को उसका कथन-"तुमने मेरे यौवन की आहुति देकर अपनी गुरु दक्षिणा जुटायी है। " (पेज 93 माधवी) में माधवी का आक्रोश व्यंजित है। माधवी संसार की मानसिकता पर भी व्यंग्य करती है- "यही तो विडम्बना है और संसार तुम्हें ही तपस्वी और साधक कहेगा , मेरे पिता को दानवीर कहेगा, और मुझे? चंचल वृत्ति की नारी , जिसका विश्वास नहीं किया जा सकता। यही ना...? (पेज 93 माधवी)

माधवी अंत में अपने जीवन के खालीपन , अपने अतृप्त मातृत्व तथा अपने हृदय के डर को बयान करती है। वास्तव में माधवी का चरित्र एक ऐसी नारी का चरित्र है जो पुरुष के दंभ और महत्त्वकांक्षा की बलि चढ़ जाता है। वह मूक

बनी इधर से उधर पुरुष इंगित पर नाचती रहती है और अंततः ऐसी स्थिति को प्राप्त होती है जहाँ कोई भाव शेष नहीं बचते। माधवी आदि से अंत तक त्याग की और उदारता की मिसाल बनी रहती है।यह माधवी की उदारता ही है कि वह अंत में भी गालव को आशीष ही देती है- "तुम जाओ, गालव, गुरुजन तुम्हारी राह देख रहे हैं। युग-युगों तक तुम्हें मेरा आशीर्वाद मिलता रहे। मैंने अपनी भूमिका निभा दी...।" (पेज 96 माधवी)

इस प्रकार माधवी इस संपूर्ण नाटक में उस **नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती है** जो अपने को तिल-तिल जलाकर भी दूसरों के काम आती है परन्तु फिर भी समाज की दृष्टि में वह दुर्बलमनः ही कहलाती है। माधवी का चरित्र एक प्रकार की खीझ उत्पन्न कर एक विद्रोह को आमंत्रित करता है , जो जड़ सामाजिक रूढ़ियों और पुरुषवादी वर्चस्व के खिलाफ नारी समाज को करना होगा।

1.1.4 गालव :आत्मकेन्द्रित चरित्र

नाटक का दूसरा महत्त्वपूर्ण पात्र **गालव** है। गालव को नाटक के नायक की संज्ञा नहीं दी जा सकती क्योंकि वह अवसरवादी व्यक्तित्व का है। आदि से लेकर अंत तक उसके चरित्र में ऐसी गंभीरता के दर्शन नहीं होते जो नायक के लिए अनिवार्य मानी जाती है।

मुनिकुमार गालव विश्वामित्र का शिष्य है। गालव 12 विद्याओं में पारंगत होने के उपरांत अपने गुरु से गुरु दक्षिणा लेने की हठ करता है। विश्वामित्र के बार-बार मना करने पर भी वह अप ने हठ को नहीं छोड़ता। अंततः क्रोधित होकर विश्वामित्र उससे आठ सौ अश्वमेधी घोड़े माँग लेते हैं। इस बिंदु से गालव की एक अनवरत खोज श्याम कर्णी और श्वेत वर्णी आठ सौ अश्वमेधी घोड़ों के लिए आरंभ होती है। गालव बारह विद्याओं में पारंगत विश्वामित्र का शिष्य है जिसका तात्पर्य यही है कि वह बहुत बुद्धिमान है। गालव अपनी बुद्धिमानी का परिचय नाटक के आदि से लेकर अंत तक देता है।

गालव अत्यंत **व्यवहारकुशल** है वह जानता है कि कब, कहाँ और किससे काम निकाला जा सकता है। यही कारण है कि जब वह जान जाता है कि ययाति को आत्मप्रशंसा सुनने की आदत है तो वह उसकी और अधिक प्रशंसा करने लगता है- "महाराज ययाति ने राज-पाट त्याग दिया है , मैं जानता हूँ, पर मैं यह भी जानता हूँ कि यशस्वी, दानवीर, ययाति ही मेरे अभ्यर्थन का कोई उपाय कर सकते हैं। " (पेज 15 माधवी) वह ययाति की प्रशंसा के लगभग पुल बाँध देता है- "लोग कहते थे , जैसे मरूस्थल में भटकने वाला व्यक्ति झरने की ओर भागता है , वैसे ही हताश व्यक्ति ययाति के द्वार की ओर उन्मुख होता है। ययाति ने आज तक किसी को खाली हाथ नहीं लौटाया। मैंने यही सुना था पर मुझसे भूल हुई, महाराज, मैं क्षमा चाहता हूँ। आज्ञा दीजिए।" (पेज 16 माधवी)

माधवी

गालव का चरित्र एक **हठी व्यक्ति** का चरित्र है। अपने हठ के कारण ही वह विश्वामित्र के क्रोध का कारण बनता है। वह दर-दर आठ सौ अश्वमेधी घोड़े ढूँढता है और घोड़े न मिलने पर भी वह अपना हठ नहीं छोड़ता तथा आत्महत्या करने का प्रयास करता है। गरूड़ द्वारा राजा ययाति का नाम सुझाए जाने पर वह उनके आश्रम जाता है और उनसे आठ सौ अश्वमेधी घोड़े दान में माँगता है। राजा ययाति के बार-बार समझाने पर भी वह अश्वमेधी घोड़ों के लिए अपना हठ नहीं छोड़ता और विश्वामित्र के पास अपनी प्रार्थना लेकर जाना स्वीकार नहीं करता। यह गालव का हठ ही है जिसके कारण माधवी की तीन राजाओं के दरबार में बलि चढ़ती है।

गालव को यदि कर्त्तव्यनिष्ठ और वचन का पक्का चरित्र कहा जाए तो यह गलत होगा। सिक्के के दो रूपों की तरह गालव के चरित्र के भी दो पक्ष हैं। यह सही है कि वह अपनी गुरु भक्ति का पक्का है तथा गुरु को दिया हुआ वचन पूरा करना चाहता है परन्तु दूसरी ओर माधवी के प्रति वह किसी प्रकार के कर्त्तव्य का पालन नहीं करता। वह माधवी के जीवन का ग्रहण बन जाता है। माधवी को उसके कारण दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। माधवी के प्रति वह किसी प्रकार की कर्त्तव्यनिष्ठा का पालन नहीं करता। अंततः वह उसे स्वीकारने से भी मना कर देता है।

वास्तव में गालव की कर्त्तव्यनिष्ठा अपने गुरु के प्रति चाहे रही हो परन्तु सही मायनों में उसे कर्त्तव्यनिष्ठ प्राणी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि कर्त्तव्यनिष्ठा का तात्पर्य किसी एक के प्रति नहीं वरन् सभी के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठत है। यूँ गुरु के प्रति गालव कर्त्तव्यनिष्ठ है। नाटक के आरंभ में ही वह कहता है- "मेरे जीवन की कोई सार्थकता नहीं। मैंने अपने गुरु को वचन दिया था, उसे मैं पूरा नहीं कर पाया। मैं अपने गुरु महाराज के लिए गुरु-दक्षिणा नहीं जुटा पाया हूँ। मुझे जैसे पातकी के लिए मर जाना ही उचित है।" (पेज -12 माधवी)

गालव में आम व्यक्तियों की तरह सांसारिक **भोग-विलास मे मोह और लालसा** भी है। माधवी चक्रवर्ती पुत्र को जन्म देगी यह सुनकर वह अपने कर्त्तव्य से पथभ्रष्ट होने लगता है तथा उसके मन में लालसा का समावेश हो जाता है- "माधवी जिसे जन्म देगी वह चक्रवर्ती राजा बनेगा, ऐसा ही कहा महाराज ने! क्या माधवी के गर्भ से पैदा होने वाला गालव का पुत्र भी चक्रवर्ती राजा हो सकता है? चक्रवर्ती गालव! मेरे सामने संभावनाओं के कैसे प्रसार खुलने लगे हैं। माधवी को पाने का अर्थ है, चक्रवर्ती राजा तक बन जाने की संभावना।" (पेज 22 माधवी) इस लालसा के चलते वह अपने गुरु पर भी संदेह करने लगता है- "वह मुझे लज्जित करना चाहते हैं। नहीं तो आठ सौ घोड़े कौन माँगता है? पहले कभी भी उन्होंने अपने किसी शिष्य से ऐसी गुरु दक्षिणा नहीं माँगी। फिर मुझ पर ही ऐसी कृपा क्यों?" (पेज 22 माधवी)

माधवी

गालव अपनी गुरु दक्षिणा स्वयं जुटाने में असमर्थ रहता है तथा माधवी को साधन के रूप मे इस्तेमाल करता है। वह माधवी के माध्यम से ही अपने गुरु ऋण से उऋण हो पाता है। यदि ययाति माधवी को गालव को दान में न देता तो गालव कभी भी गुरु दक्षिणा के रूप में आठ सौ अश्वमेधी घोड़े नहीं जुटा पाता। गालव केवल अपने विषय में सोचने वाला पात्र है। उसे केवल अपने आत्मसम्मान , अपने वचन-पालन की चिंता है। माधवी के प्रति कोमल भाव रखने के बावजूद भी वह उसे दान में मिली हुई वस्तु के अतिरिक्त कुछ नहीं समझता यही कारण है कि वह उसके प्रति **उपयोगितावादी दृष्टिकोण** रखता है। राजा हर्यश्च के दरबार में जब माधवी उससे कहती है- "यह क्या हो रहा है, गालव? तुम मुझे कहाँ ले आये हो ? मेरे साथ किस जन्म का वैर चुकाने आये हो ?" (पेज 32 माधवी) आदि प्रश्न करती है तब भी गालव मौन बना रहता है। ऐसा नहीं है कि गालव स्थिति की विकटता या माधवी के भविष्य को नहीं समझ पाता वह कहता भी है- "माधवी तुम क्या कह रही हो ? इसमें तो बरसो लग जायेंगे। इस तरह मैं कब ऋण मुक्त हो पाऊँगा और तुम्हें न जाने किस-किस राजा के रनिवास में रहना पड़े। " (पेज 36 माधवी) इसके बावजूद भी वह 200 अश्वमेधी घोड़ों के बदले में माधवी का सौदा कर लेता है।

गालव माधवी की अपने पुत्र के प्रति ममता को समझने में भी असमर्थ रहता है। इसका प्रमुख कारण उसका **आत्मकेन्द्रित व्यक्तित्व** है। वह माधवी के बालक को एक अनुबंध की संतान के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानता "उसे तुम अपना बच्चा समझती हो , माधवी तुमने तो राजा को एक राजकुमार जुटाया हैं , बस यही हमारा अनुबंध था।" (पेज 52 माधवी) **माधवी** जब गालव को सोते हुए छोड़ जाती है तब वास्तविक स्थिति का पता किए बिना ही वह उस **पर दोषारोपण** करने लगता है- "अब माधवी गयी तो कहाँ गयी ? क्या मालूम उसने सोचा हो कि इस यातना का तो कोई अंत नहीं है। मैं और सहन नहीं कर सकती। आखिर थी तो वह नारी ही। नारी भगवान की ऐसी सृष्टि है कि जो अपनी कोमलता के कारण, सदा किसी न किसी का सहारा लिए रहती है।" (पेज 76 माधवी)

गालव जिसके सहारे अपने ऋण से उऋण होने के लिए प्रयासरत था उसे ही दुर्बल मान लेने की भूल करता है- "पत्तों की नाव के सहारे मैंने सागर पार करने की चेष्ट की।" (पेज 75 माधवी) नाटक के अंत में गालव माधवी से विवाह न कर इस बात का परिचय दे देता है कि वह एक अत्यंत **स्वार्थी और लालसायुक्त प्राणी** था। उसे जब तक माधवी की आवश्यकता थी तब तक उसने उसे अपनी ढाल बनाया। परन्तु जैसे ही वह गुरु दक्षिणा के भार से मुक्त हुआ उसे माधवी का होना न होना बराबर लगने लगा।कहा जा सकता है कि गालव एक **आम व्यक्ति की दुर्बलताओं से ग्रसित** चरित्र है। उसमें यदि कहीं कर्त्तव्यनिष्ठता या वचनबद्धता का गुण दृष्टिगत होता भी है तो केवल आत्मसम्मान और हठ के कारण अन्यथा वह दुर्बलताओं से ग्रस्त अवसरवादी चरित्र है।

1.1.5. ययाति : पिता से अधिक चक्रवर्ती सम्राट

नाटक का तीसरा तथा अत्यंत महत्त्वपूर्ण पात्र ययाति है। माधवी उसकी एकमात्र पुत्री है। ययाति अपने समय का **चक्रवर्ती सम्राट** है परन्तु **वर्तमान में वह आश्रमवासी** है। **ययाति की गणना महान दानवीरों** कर्ण और राजा हरीशचन्द्र के साथ की जाती है। ययाति की यह दुर्दात इच्छा है कि उसकी गणना सबसे बड़े दानवीरों में की जाए और अपनी इसी इच्छा के चलते वह गालव को अपनी एकमात्र पुत्री माधवी को दान में देने से भी नहीं चूकता। ययाति द्वारा दिया गया यह दान ही संपूर्ण नाटक की कथा का कारण बनता है।

ययाति के माध्यम से भी लेखक ने **पुरुषवादी आत्मकेंद्रित मानसिकता** को अभिव्यक्ति दी है। ययाति प्रतापी तथा दानवीर राजा है तथा राजा की संपूर्ण प्रतिष्ठा का निर्वाह करता है परंतु अपनी मातृहीना पुत्री के प्रति कर्त्तव्यनिष्ठा का निर्वाह करना वह जैसे भूल जाता है। आदि से लेकर अंत तक ययाति को अपनी दानवीर राजा की छवि न बिगड़ने का भय रहता है और वह उसे बनाए रखने का हर संभव प्रयास करता है परंतु माधवी के जीवन की विडंबना को समझने मे अंत तक असमर्थ रहता है। गालव एक पर पुरुष है परंतु माधवी के स्वयं के पिता भी उसे समझने का कोई प्रयास नहीं करते। ययाति के चरित्र का गठन लेखक ने जिस प्रकार से किया है वह नाटक के द्वन्द्व को और भी अधिक गहरा देता है।

ययाति अपनी पुत्री के प्रति अपने **कर्त्तव्य का निर्वाह उचित रूप से नहीं** कर पाया यही कारण है कि वह बिना कुछ सोचे-समझे एक झौंक में माधवी को गालव को दान में दे देता है। अपनी पुत्र के भाग्य की अनिश्चितता भी उसे व्याकुल नहीं करती। एक पिता अपनी पुत्री को अलग-अलग राजाओं के रनिवास में रहने की बात सुन कैसे तटस्थ बना रहता है, यह अपने-आप में बड़ा अजीब लगता है।

ययाति एक आम राजा की भाँति ही स्वयं की **प्रशंसा को सुन हर्ष को प्राप्त होता** है। ययाति को अपनी पुत्री से अधिक प्रिय यश है। नाटक के अंत में ययाति अपनी दानवीरता की प्रशंसा स्वयं करता है- "ययाति यदि दानी नहीं है तो कुछ भी नहीं है। " (पेज 85 माधवी) अंतिम अंक का अंतिम दृश्य लेख क ने लिखा ही इस उद्देश्य से है कि पुरुष प्रधान समाज में पुरुष केवल अपनी ही सफलता का डंका पीटता रहता है नारी के प्रति वह अपना कोई कर्त्तव्य नहीं समझता। विश्वामित्र और ययाति की बातचीत का केन्द्र गालव है , ये दोनों ही गालव की कर्त्तव्यनिष्ठा और एक दूसरे को आदर-मान देते नहीं अघाते। परन्तु जिसकी वजह से सब कुछ संभव हो पाया है , उस माधवी को ही भूल जाता हैं।

माधवी

ययाति अपने समय का पराक्रमी राजा तथा महान दानवीर है। वह अपने द्वार पर आए किसी याचक को रिक्त हस्त नहीं लौटा सकता। गालव द्वारा 800 अश्वमेधी घोड़े दान में माँगे जाने पर वह अपने आपको अत्यंत संकट में पाता है और कोई उपचार न दिखायी देने पर वह गालव को अपनी एकमात्र पुत्री दान में दे देता है। इससे ययाति के चरित्र की अदूरदर्शिता दिखायी देती है। ययाति के विषय में कहा जा सकता है कि वह केवल **अपने विषय में सोचने वाला चरित्र है**। अपनी पुत्री को दान में देते हुए वह इस बात का तनिक भी विचार नहीं करता कि उसकी पुत्री कोई वस्तु नहीं है, जिसे उठाकर वह किसी को भी दान में दे दे। ययाति की दानवीर कहलाने की यह इच्छा उसकी पुत्री के भविष्य को दांव पर लगा देती है। ययाति को दानवीर होने का गर्व इतना अधिक प्रिय है कि वह किसी के विषय में कुछ नहीं सोच पाता। आश्रमवासी मित्रों के समझाए जाने पर भी वह कोई उपयुक्त उत्तर नहीं ढूँढ पाता।

ययाति अपने आश्रमवासी मित्रों से जब माधवी के हर्यश्च के दरबार में रहने की बात सुनता है , तब भी एक पिता होने के नाते उसका हृदय विहल नहीं होता। वह केवल इतना ही कहता है कि अब वह दान में दी गई वस्तु है और उसे अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना ही होगा।

माधवी में ययाति की संकल्पना एक ऐसे राजा के रूप में की गई है जो मात्र अपने लिए भावुक है। अपनी संतान के प्रति उसका कोई कर्त्तव्य वह नहीं समझता। यही कारण है कि जब माधवी एक के बाद एक तीन राजाओं के रनिवास में रहकर तथा प्रत्येक राजा के लिए एक पुत्र रत्न पैदा करके आती है तो ययाति का उससे कोई संवाद नहीं दिखाया गया। संपूर्ण नाटक में ययाति कहीं भी अपनी संतान के दुःख में दुखी दिखाई नहीं देता। ययाति माधवी का स्वयंवर रचाना चाहता परन्तु उसमें भी अपनी पुत्री की कल्याण कामना कम और यश-अर्जन की भावना ज्यादा है। ययाति अपने यश के विरोध में कुछ सुनने को तैयार नहीं। न्नातक के नया दो महत्त्वपूर्ण पुरुष पात्रों गालव और विश्वामित्र की भांति ही ययाति भी अहम् ग्रस्त और अपनी ही धुरि पर घूमने वाला, स्व-केंद्रित चरित्र है|

1.1.6 विश्वमित्र तथा अन्य चरित्र

विश्वामित्र भी 'माधवी' के एक प्रधान पात्र है। विश्वामित्र की गुरु दक्षिणा जुटाने के लिए ही समस्त नाटक का ताना-बाना बुना गया है। परन्तु विश्वामित्र की सोच भी नाटक के अन्य पुरुष पात्रों से अलग नहीं जहाँ गालव को कर्त्तव्यनिष्ठ सिद्ध करने की बात आती है तो वह समग्र परिस्थिति को जानते हुए भी गालव को ही एकनिष्ठ और कर्त्तव्यनिष्ठ मानते हैं। विश्वामित्र जैसा ज्ञानी-ध्यानी भी माधवी की कर्त्तव्यनिष्ठा और साधना के विषय में कुछ नहीं कहता। वह इस बात को भली-भाँति जानते हैं कि अश्वमेधी घोड़ों की वह संख्या उपलब्ध नहीं है जो उन्होंने माँगी है, वह यह भी जानते हैं कि गालव के लिए अश्वमेधी घोड़े जुटाने में माधवी सहायिका बनी हुई है इसके बावजूद

भी वह गालव को तो कर्त्तव्यनिष्ठ मानते हैं परन्तु जिसने गालव की साधना को संपूर्ण बनाने में महती भूमिका का निर्वाह किया उसके लिए दो शब्द भी नहीं कहते।

इन चार महत्त्वपूर्ण चरित्रों के अतिरिक्त नाटककार ने नाटक में कथावाचक की भी नियोजना की है। कथावाचक के अभाव में एक अंक से दूसरे अंक का जुड़ना असंभव है। कथावाचक के माध्यम से इस नाटक के विस्तृत फैलाव को बंधने का अवसर मिलता है।

आश्रमवासी-1 और आश्रमवासी-2 ययाति की मानसिकता को अभिव्यक्ति देने का ही काम करते हैं। जहाँ आश्रमवासी-1 ययाति की प्रशंसा में बोलता है वही आश्रमवासी- 2 उसे वास्तविकता का परिचय कराता चलता है। कुल मिलाकर इन दोनों चरित्रों की रचना नाटककार ने ययाति के चरित्र को गति देने के लिए ही की है।

गालव के मित्र के रूप में **तापस** के चरित्र का भी नाटक में अंकन हुआ है। तापस गालव का मित्र तथा विश्वामित्र का शिष्य है। तापस इस यथार्थ से परिचय रखता है कि गालव 800 अश्वमेधी घोड़ों को नहीं जुटा पाएगा। तापस विश्वामित्र से वस्तुस्थिति के सही वर्णन का भी साहस रखता है।इसके अतिरिक्त नाटक में तीन राजाओं-राजा **हर्यश्चय**; राजा **दिवोदास** तथा **उशीनर** का चित्रण है। तीनों ही राजाओं के माध्यम से लेखक ने राजाओं की विलासी प्रवृत्ति को अंकित करने का प्रयास किया है। राजा दिवोदास का चरित्र तो पूर्णतः रसिक और विलासी राजा के रूप में चित्रित है। राजा हर्यश्चय के रनिवास की स्थिति का चित्रण करते हुए नाटककार राजाओं की उस दृष्टि को स्पष्ट करता है जहाँ राजा स्त्री को जड़ वस्तु के अतिरिक्त कुछ और नहीं समझते।

1.1.6.1 नामकरण

चारित्रिक दृष्टि से विश्लेषण करने के उपरांत यह स्पष्ट हो जा ता है कि 'माधवी' नायिका प्रधान नाटक है। संपूर्ण नाटक की कथा माधवी पर ही केन्द्रित है अतः नाटक का नायक कोई पुरुष पात्र न होकर माधवी ही ठहरती है। लेखक का प्रमुख उद्देश्य एक ऐसी जड़ सामाजिक व्यवस्था का चित्रण करना है जहाँ नारी समस्त त्याग , बलिदान और कर्मठता के बावजूद भी हेय बनी रहती है। माधवी तमाम परिस्थितियों से जूझने और टूटने के बावजूद भी अंत में पाठक और दर्शक को इस व्यवस्था के प्रति झंझोड़ने मे समर्थ है। नाटक की नायिका माधवी है और वह ही समस्त कार्य व्यापार का केन्द्र बिन्दु है अतः नाटक का नामकरण सार्थक है।

1.1.6.2 परिवेश

नाटक का परिवेश 5,000 वर्ष पूर्व का है। नाटककार ने बहुत बड़े देश-काल और वातावरण को नाटक का भाग बनाने का प्रयास किया है। महाराज ययाति का आश्रम, गालव और माधवी का जंगलों में भटकना , राजाओं के दरबार आदि का चित्रण, विश्वामित्र का आश्रम और नाटक के अंत में माधवी के स्वयंवर की तैयारी आदि। इतने बड़े परिवेश को रंगमंच पर समेटना अत्यंत दुष्कर कार्य है। कथावाचक के प्रयोग से यह कार्य थोड़ा सरल होता है इसके अतिरिक्त रंगमंचीय प्रयोगों के माध्यम से भी इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

देशकाल और वातावरण अर्थात् परिवेश को यदि काल-बोध के आधार पर देखा जाए तो कहा जा सकता है कि नाटककार ने मान व समाज के उस परिवेश और वातावरण को चित्रित करना चाह है , जो 5,000 वर्ष पूर्व भी विद्यमान था और अब भी विद्यमान है। वह परिवेश है पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति। इस परिवेश की सर्जना में नाटककार पूर्णतः सफल रहा है।

1.1.6.3 संवाद तथा भाषा शैली

संवाद और भाषा शैली की दृष्टि से भी माधवी एक सफल नाटक है। माधवी एक विशेष प्रकार के परिवेश को लेकर चलने वाला नाटक है और उसे विशेष परिवेश के अनुसार ही नाटक की भाषा शैली और संवाद रचना भी विशेष है। नाटक के संवाद अधिकांशतः छोटे-छोटे हैं जो मंच की आवश्यकता को पूरा करते हैं उदाहरणतः "मैं अपने गुरु महाराज के लिए गुरु दक्षिणा नहीं जुटा पाया हूँ। मुझ जैसे पातकी के लिए मर जाना ही उचित है। " (पेज 12 माधवी) कहीं-कहीं जहाँ पात्र भावावेश की दशा में हैं संवाद लंबे भी हैं परंतु वह नाटक की गति में किसी प्रकार की बाधा नहीं डालते। प्रत्येक पात्र तथा वस्तुस्थिति के अनुसार संवादों का तेवर तथा शैली बदलती रहती है। ययाति चूंकि राजा है अतः उसके संवाद एक राजा की गरिमा से युक्त हैं- "दान में दी हुई चीज को वापस नहीं लिया जाता, मारीच, चलिए, हवन का समय हो गया। " (पेज 14 माधवी) गालव के संवादों में शैली युवाजनोचित हो गई है। उसके संवादों में कही एक युवा का आत्मविश्वास है, कहीं हठ तो कहीं स्वाभिमान। इसी प्रकार माधवी के संवादों में भाव-प्रधान शैली हो गई है। नाटक की भाषा और शैली तद्युगीन परिवेश को जीवंत करने में पूर्णतः समर्थ है।

1.1.6.4 रंगमंचीयता

भीष्म साहनी लंबे समय तक 'इप्टा' से जुड़े रहे। अतः उन्हें नाटक करने का सुदीर्घ अनुभव रहा। यही कारण है कि माधवी के रंगमंचीय पक्ष को लेकर किसी प्रकार के संदेह की स्थिति नहीं रहती। 'माधवी' मंचीय दृष्टि से एक सफल

नाटक है। नाटककार ने यथोचित निर्देशकीय भी दिए हैं , जिससे निर्देशक को नाटककार की दृष्टि को समझने में सहयोग मिलता है। अधिक रंग-संकेत न देने का एक तात्पर्य यह भी है कि नाटककार निर्देशक की कल्पना को खुली उड़ान के लिए अवकाश देता है| निर्देशक अरविन्द गौड़ द्वारा 'माधवी' का अनेक बार सफल मंचन किया जा चुका है उन्होंने माधवी की प्रस्तुति सर्वप्रथम एक प्रयोग के रूप में की और उसे मंच पर केवल एक अभिनेता के साथ मंचित किया| अपने इस प्रयोग में निर्देशक पूरी तरह सफल रहा| अरविन्द गौड़ द्वारा निर्देशित 'माधवी' में माधवी का चरित्र सर्वप्रथम राशि बनी नाम की अभिनेत्री ने निभाया| इसकी प्रस्तुति और प्रदर्शन निर्देशक ने कथावाचन की शैली को अपनाया| नाटक का आरंभ ही अभिनेत्री के सीधे दर्शकों के साथ इस संवाद से होता है कि यह कहानी माधवी की हो, मानसी की अथवा मोना की कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि समस्या सबकी एक से है।

नाटक के विस्तृत कलेवर को समेटने के लिए निर्देशक ने रंग प्रयोग भी किए। निर्देशक ने भव्य मंच के स्थान पर विभिन्न रंगों और बांसों के इस्तेमाल के माध्यम से परिवेश को संप्रेषित करने का प्रयास किया जिसमें वह सफल रहा। माधवी की मंच सज्जा सहज होने के बावजूद अपना अमिट प्रभाव छोड़ती है।

1.1.6.5 उद्देश्य

नाटक मूलतः इस बात की ओर इंगित करता है कि यद्यपि संपूर्ण घटनाक्रम के बीच में एक स्त्री अवस्थित थी परन्तु जब श्रेय की बात आती है तो सारा श्रेय पुरुषवर्ग अपने पाले में डाल लेता है। कथावाचक का कथन है- "ऋषि विश्वामित्र को अपने शिष्य पर सच्चा गर्व होने लगा। जो कोई उनसे मिलता , उसी से उसकी प्रशंसा करते। उधर दानवीर ययाति ने अपनी बेटी का स्वयंवर रचा दिया। चुन ले , जिसे माधवी अपना वर चुनना चाहती है। ययाति सभी से यही कहते, विश्वामित्र ने गालव की नहीं, मेरी परीक्षा ली है और मैं पूर्णतः उत्तीर्ण हुआ हूँ।" (पेज 82 माधवी)

सभी पुरुष अपना-अपना श्रेय लेने को तैयार है परन्तु जिस माध्यम से गालव अथवा ययाति का लक्ष्य पूरा हुआ है तथा विश्वामित्र को गुरु दक्षिणा की प्राप्ति हुई है, इस माध्यम के श्रेय का वर्णन किसी के माध्यम से नहीं आया। स्त्री यद्यपि सभी पुरुषों की कार्यसिद्धि के केन्द्र में है , बावजूद इसके उसे उसका प्रदेय नहीं दिया जाता। इसी को केन्द्रित करना नाटककार का मूल उद्देश्य रहा है। नाटककार पुरुष वर्ग की दृष्टि में नारी वर्ग का दृष्टिकोण प्रकट कर नारी समुदाय में एक ऐसा अलख जगाना चाहता है, जिससे नारी अपनी इच्छाओं का सम्मान कर पाए| इसी बिन्दु पर आकर यह नाटक नारी विमर्श का नाटक बन जाता है। आज स्त्री ने इस दिशा में काफी आगे तक कदम बढ़ा दिए हैं परन्तु मंजिल की प्राप्ति अभी बाकी है। पुरुष प्रधान समाज में अपना स्थान ढूँढना इतना सरल कार्य नहीं है।

माधवी

निष्कर्षतः माधवी एक ऐसा नाटक है जो न स्त्री जीवन की त्रासदी को महाभारतकालीन परिवेश के माध्यम से अभिव्यक्ति देता है। यह केवल उस युग का ही सत्य नहीं बल्कि आज का भी सत्य है और अपनी इसी सत्यता के कारण यह नाटक प्रासंगिक है। नाटक दर्शकों को इस भीषण यथार्थ से टकराने की ऊर्जा देता है कि आखिर इतने बरसों से औरत आज भी क्यों अपने खोल से बाहर नहीं आ पा रही। यह नाटक दर्शकों को उकसाने तथा स्थिति की अपरिवर्तनशीलता से टकराने का साहस जगाने का भी काम करता है।

प्रश्नोत्तर

1. माधवी नाटक किसकी रचना है?
2. नाटक के तत्वों के आधार पर माधवी की समीक्षा कीजिए।
3. माधवी नाटक की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।
4. माधवी नाटक के नामकरण की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
5. माधवी की कथावस्तु पर टिप्पणी लिखिए।
6. माधवी' एक प्रयोगधर्मी नाटक स्पष्ट कीजिए।
7. माधवी का चरित्र चित्रण कीजिए।
8. माधवी नायिका प्रधान नाटक है, स्पष्ट कीजिए।
9. गालव का चरित्र चित्रण कीजिए।
10. ययाति का चरित्र चित्रण कीजिए।
11. विश्वामित्र का चरित्र चित्रण कीजिए।
12. 'माधवी' का उद्देश्य अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
13. माधवी नायिका प्रधान नाटक है, स्पष्ट कीजिए।

संदर्भ ग्रंथ

माधवी, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन।

अन्य स्रोत:

निर्देशक अरविंद गौड़ के साथ हुई बातचीत।

माधवी